

मान रे रावण अभिमानी माया रघुवर की ना जानी लिरिक्स



मान रे रावण अभिमानी,
माया रघुवर की ना जानी,
कुटी में लक्ष्मण जी होते,
प्राण तेरा क्षण में हर लेते। **lbd।**

मैं पत्नी हूँ श्री राम की,
वो त्रिलोकी नाथ,
किस कारण दुष्ट तूने,
पकड़ा मेरा हाथ,
बोलता भिक्षुक की वाणी,
माया रघुवर की ना जानी। **lbd।**

हाय लखन को भेजकर,
पड़ी दुष्ट के फंद,
लखन गया रावन आया,
हुआ बहुत विलम्ब,
जटायु सुन रहा वाणी,
माया रघुवर की ना जानी। **lbd।**

रावण पहुँचा लंक में,
सीता को बाग उतार,
सीता सोच करे मन मे,
आ जाज्यो रगुनाथ,
सुनो रे पेड़ पक्षी प्राणी,
माया रघुवर की ना जानी। **lbd।**

तुलसीदास की विनती,
सुणज्यो सिरजनहार,
सीता अन जल लेवे नहीं,
करज्यो कोई उपाय,
नाथ मेरी यहि अरजानी,
माया रघुवर की ना जानी। **lbd।**



मान रे रावण अभिमानी,
माया रघुवर की ना जानी,
कुटी में लक्ष्मण जी होते,
प्राण तेरा क्षण में हर लेते।bd।

गायक – सत्यनारायण जी लुहार।
प्रेषक – चारभुजा साउंड सिस्टम जोरावरपुरा।
भेरू शंकर शर्मा। 9460405693
